✗ यदि मध्य एवं निम्न मध्य गंगा घाटी में लौह के कृषि सम्बन्धी उपकरणों के प्रयोग की तुलना की जाये तो जहाँ ~~क~~ ताम्रपाषाणी-क संस्कृतियों में (1000 ई० पू० में) लोहे के उपकरण कम मिले हैं वहीं N.B.P.W के युग में लौह उपकरणों की संख्या बढ़ गयी। राजघाट से मिले आकड़ो को देखने पर, जहाँ प्राक् N.B.P. स्तर से लोहे के 1 या 2 उपकरणों की प्राप्ति हुई है वही दूसरी ओर N.B.P. स्तर से 100 से अधिक लौह उपकरण मिले हैं, चिराँद, सोनपुर व ताराडीह से प्राप्त आकड़े

भी इसी निष्कर्ष को स्थापित करते हैं।

जखेड़ा एवं गनवेरिया के उत्खनन् स्थलों से इस बात की पुष्टि होती है कि 600 ई० पू० से ही मध्य व निम्न मध्य गंगा दोआब में लोहे के हलों का प्रयोग शुरू हो चुका था। इस तरह वैदिकोत्तर काल में लौह उपकरणों के प्रयोग से अधिशेष आधारित भौतिक संस्कृति के विस्तार की पृष्ठभूमि बनी। कौशाम्बी के उत्खनन् से प्राप्त एक बड़ी लौह कुल्हाड़ी से यह स्पष्ट होता है कि लोहे की कुल्हाड़ी का प्रयोग जंगलों को काटने हेतु किया गया। हाथी की उपलब्धता के कारण दलदली इलाकों से लकड़ियों को बाहर निकालना संभव हो पाया. लोहे के हल के प्रयोग द्वारा उस क्षेत्र की कठोर मिट्टी को जोतकर कृषि योग्य बनाया जा सका. इस प्रक्रिया में कुदाल व हंसिये का उपयोग कृषि अर्थव्यवस्था के विस्तार में सकारात्मक प्रभाव डालता है।

जारी.....